20/01/2026

जीवन की छोटी-छोटी लड़ाइयाँ

सुबह की ठंडी बूंदाबांदी में भीगता हुआ रमेश अपनी साइकिल से दफ्तर की ओर बढ़ रहा था। पहाड़ों से उतरती हवा के साथ आती sleet की बौछारें उसके चेहरे पर चुभती हुई सुइयों की तरह महसूस हो रही थीं। जनवरी का महीना था और मुरादाबाद में इस साल सर्दी कुछ ज्यादा ही पड़ रही थी। उसकी wiry काया उस ठंड में और भी दुबली-पतली लग रही थी, लेकिन उसके अंदर का जज्बा किसी पहलवान से कम नहीं था।

रमेश की जिंदगी किसी बड़ी फिल्म की कहानी नहीं थी। न कोई बड़ा ड्रामा, न कोई अचानक आया सौभाग्य। उसका जीवन एक humdrum दिनचर्या का प्रतीक था - सुबह उठना, काम पर जाना, शाम को लौटना, और फिर यही सिलसिला अगले दिन दोहराना। लेकिन इस साधारण जीवन में भी कुछ असाधारण था। वह था उसका धैर्य, उसकी मेहनत, और सबसे बढ़कर, अपनी बेटी को अच्छी शिक्षा देने का उसका सपना।

दफ्तर पहुंचकर जब वह अपनी मेज पर बैठा, तो उसके सहकर्मी राजीव ने कहा, "यार रमेश, तुम भी कमाल हो। इतनी ठंड में भी साइकिल से आते हो। कोई सवारी नहीं मिलती क्या?"

रमेश मुस्कुराया, "राजीव भाई, साइकिल से आने में पैसे बचते हैं। वो पैसे मैं प्रिया की ट्यूशन फीस में लगाता हूं।"

राजीव के चेहरे पर एक अजीब सा भाव आया। वह चुप हो गया। दरअसल, रमेश की यह सादगी और समर्पण कई लोगों को असहज कर देता था। आज के युग में, जहां हर कोई दिखावे में जी रहा है, वहां रमेश जैसे लोग एक अजीब सी परेशानी खड़ी कर देते हैं - वे हमें हमारी अपनी कमजोरियों का आईना दिखा देते हैं।

शाम को घर लौटते समय, रमेश ने एक toad को सड़क पार करते देखा। बारिश के बाद निकले इस मेंढक को देखकर उसे अपना बचपन याद आ गया। गांव में, बरसात के मौसम में, वह और उसके दोस्त इन मेंढकों के पीछे भागा करते थे। कितनी सरल थी वह जिंदगी! कोई टेंशन नहीं, कोई जिम्मेदारी नहीं। लेकिन आज? आज तो हर पल एक चुनौती है।

घर पहुंचते ही उसकी बेटी प्रिया दौड़कर आई। "पापा, आज स्कूल में मेरे नंबर सबसे ज्यादा आए गणित में!"

रमेश की आंखों में खुशी के आंसू आ गए। उसने बेटी को गले लगाया। यही तो वह पल था जिसके लिए वह हर दिन मेहनत करता था, sleet और बर्फीली हवाओं में भी साइकिल चलाता था।

उसकी पत्नी सुमन ने खाना परोसते हुए कहा, "सुना है दफ्तर में प्रमोशन के लिए लिस्ट निकली है। तुम्हारा नाम भी है?"

रमेश ने बात को टाल दिया। सच्चाई यह थी कि उसका नाम लिस्ट में था, लेकिन प्रमोशन के लिए एक insidious खेल चल रहा था। बॉस के चहेते कर्मचारियों को ही प्रमोशन मिलने वाला था, और रमेश उन चहेतों में शामिल नहीं था। वह चापलूसी नहीं कर सकता था, झूठी तारीफें नहीं गा सकता था।

यह insidious व्यवस्था हमारे समाज में गहरे तक फैली हुई है। योग्यता से ज्यादा चाटुकारिता को महत्व दिया जाता है। मेहनत से ज्यादा जुगाड़ पर भरोसा किया जाता है। और सबसे बुरी बात, यह सब इतने सूक्ष्म तरीके से होता है कि कोई आपत्ति भी नहीं कर सकता।

अगले दिन दफ्तर में प्रमोशन की घोषणा हुई। जैसी उम्मीद थी, राजीव का नाम था लिस्ट में, रमेश का नहीं। राजीव, जो रोज बॉस की जी-हुजूरी करता था, जो काम कम और बातें ज्यादा करता था। रमेश को दुख हुआ, लेकिन वह चुप रहा।

लेकिन उस रात घर पहुंचकर, जब उसने प्रिया को अपनी किताबों में खोया देखा, उसे अपनी humdrum जिंदगी में भी एक खूबसूरती नजर आई। हां, उसका जीवन साधारण था, रोज की एक जैसी दिनचर्या थी, लेकिन इसी साधारण जीवन में उसने अपनी बेटी के लिए असाधारण सपने संजो रखे थे।

सुमन ने देखा कि रमेश कुछ उदास है। उसने पूछा, "क्या हुआ?"

रमेश ने गहरी सांस ली और कहा, "प्रमोशन नहीं मिला।"

सुमन ने उसका हाथ पकड़ा, "मुझे पता था। लेकिन तुम्हें पता है, मैं तुम पर गर्व करती हूं। तुमने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया।"

"लेकिन इससे क्या फायदा? पैसे तो वही कमाएगा जो चाटुकारिता करेगा।"

"पैसा ही सब कुछ नहीं है, रमेश। प्रिया को एक ईमानदार बाप मिला है। वह हमारी असली दौलत है।"

अगले हफ्ते, एक अजीब घटना घटी। दफ्तर में ऑडिट हुआ और राजीव के कुछ गलत कामों का पता चला। उसने जिन फाइलों पर काम किया होने का दावा किया था, वे दरअसल रमेश ने किए थे। इस पूरे insidious खेल में राजीव का असली चेहरा सबके सामने आ गया।

मैनेजर ने रमेश को बुलाया और माफी मांगी। "रमेश, हमसे गलती हुई। तुम्हारा प्रमोशन होना चाहिए था।"

लेकिन रमेश के लिए यह प्रमोशन उतना मायने नहीं रखता था जितना कि यह सबक - कि ईमानदारी और मेहनत कभी बेकार नहीं जाती।

उस शाम, जब वह अपनी wiry काया के साथ साइकिल पर घर लौट रहा था, आसमान साफ था। sleet की जगह हल्की धूप निकल आई थी। उसे लगा जैसे प्रकृति भी उसके साथ खुश है।

घर पहुंचकर उसने प्रिया को यह खबर सुनाई। बेटी ने कहा, "पापा, आप हीरो हो!"

रमेश हंस पड़ा। "नहीं बेटा, मैं कोई हीरो नहीं हूं। बस एक आम इंसान हूं जो अपने काम से प्यार करता है।"

"तो क्या हुआ? हीरो वही होता है जो सही काम करता है, चाहे कितनी भी मुश्किलें क्यों न आएं।"

उस रात, सोने से पहले, रमेश ने अपनी डायरी में लिखा:

"जिंदगी एक humdrum सफर हो सकती है, लेकिन इसी सफर में छुपी हैं छोटी-छोटी खुशियां। sleet की बौछारों में भी अगर हम अपना रास्ता नहीं भटकें, तो मंजिल जरूर मिलती है। मेरी wiry काया शायद कमजोर दिखे, लेकिन मेरा इरादा फौलाद से भी मजबूत है। समाज में फैले insidious भ्रष्टाचार के बावजूद, ईमानदारी का रास्ता ही सबसे सुरक्षित है। और उस toad की तरह, जो बारिश के बाद हर बार नई उम्मीद के साथ निकलता है, मैं भी हर रोज एक नई शुरुआत करता हूं।"

आज के जमाने में, जहां सफलता को सिर्फ पैसे और पद से मापा जाता है, रमेश जैसे लोग हमें यह सिखाते हैं कि असली सफलता अपने सिद्धांतों पर कायम रहने में है। उनका जीवन भले ही साधारण हो, humdrum और नीरस लगे, लेकिन उनकी ईमानदारी असाधारण है।

रमेश की कहानी हम सबकी कहानी है। हम सब अपनी-अपनी छोटी-छोटी लड़ाइयां लड़ रहे हैं - ठंड से, गरीबी से, भ्रष्टाचार से, असमानता से। लेकिन जो लोग इन लड़ाइयों में अपने सिद्धांतों को नहीं खोते, वे ही असली विजेता हैं।

अंत में, यही सबक है - चाहे कितनी भी sleet क्यों न हो, कितनी भी insidious व्यवस्था क्यों न हो, अगर हमारा इरादा मजबूत है, तो हम अपनी मंजिल तक जरूर पहुंचेंगे। और यह मंजिल सिर्फ हमारी नहीं, हमारी अगली पीढ़ी की भी होगी।

रमेश जैसे लाखों लोग हर रोज अपनी साइकिल पर, अपनी wiry काया के साथ, एक बेहतर कल की उम्मीद में निकलते हैं। वे नायक नहीं हैं, लेकिन वे हीरो हैं - हमारे समाज के सच्चे हीरो।

विपरीत दृष्टिकोण: ईमानदारी की कीमत

हम अक्सर रमेश जैसे लोगों की कहानियों को महिमामंडित करते हैं। उनकी ईमानदारी, उनका संघर्ष, उनका त्याग - सब कुछ प्रेरणादायक लगता है। लेकिन क्या कभी हमने सोचा है कि यह नैतिकता का आवरण कहीं एक आत्म-धोखा तो नहीं? क्या रमेश वास्तव में एक आदर्श है, या फिर एक ऐसा व्यक्ति जो बदलते समय के साथ तालमेल बिठाने में असफल रहा?

आइए इस कहानी को एक अलग नजरिए से देखें।

व्यावहारिकता बनाम आदर्शवाद

रमेश की पत्नी सुमन कहती है कि वह अपने पति पर गर्व करती है क्योंकि उसने कभी अपने सिद्धांतों से समझौता नहीं किया। लेकिन क्या यह गर्व की बात है या फिर एक जिद्दीपन? आखिर प्रिया को अच्छी शिक्षा देने के लिए, परिवार को बेहतर जीवन देने के लिए, क्या कुछ व्यावहारिक निर्णय लेना गलत होता?

आज की दुनिया में, जहां संसाधन सीमित हैं और प्रतिस्पर्धा भयंकर है, सिर्फ मेहनत काफी नहीं है। आपको रणनीतिक होना पड़ता है, नेटवर्किंग करनी पड़ती है, अपनी उपस्थिति दर्ज करानी पड़ती है। रमेश इसे 'चाटुकारिता' कहता है, लेकिन शायद यह सामाजिक कौशल और भावनात्मक बुद्धिमत्ता है।

परिवार के प्रति जिम्मेदारी

रमेश की बेटी प्रिया को शायद एक 'ईमानदार बाप' मिला है, लेकिन क्या उसे एक ऐसा पिता नहीं मिलना चाहिए था जो उसके भविष्य के लिए अधिक संसाधन जुटा पाता? sleet की बौछारों में साइकिल चलाना शायद प्रेरणादायक लगे, लेकिन यह स्वास्थ्य के लिए खतरनाक भी है। अगर रमेश बीमार पड़ गया, तो परिवार का क्या होगा?

एक पिता की पहली जिम्मेदारी अपने परिवार के प्रति है। अगर थोड़ी सी कूटनीति से, थोड़ी सी networking से प्रमोशन मिल सकता है और उससे परिवार की आर्थिक स्थिति सुधर सकती है, तो यह गलत कैसे हो सकता है?

व्यवस्था को बदलना बनाम स्वीकारना

रमेश जैसे लोग insidious व्यवस्था की शिकायत करते हैं, लेकिन उसे बदलने के लिए कुछ नहीं करते। वे सिर्फ चुपचाप अपना काम करते रहते हैं और उम्मीद करते हैं कि एक दिन न्याय होगा। लेकिन दुनिया ऐसे काम नहीं करती।

अगर रमेश को लगता है कि दफ्तर में भ्रष्टाचार है, तो उसे आवाज उठानी चाहिए, शिकायत करनी चाहिए, संघर्ष करना चाहिए। लेकिन वह ऐसा नहीं करता। वह बस एक निष्क्रिय शिकार की भूमिका में रहता है और अपनी असफलता को 'नैतिक श्रेष्ठता' के रूप में प्रस्तुत करता है।

राजीव का पक्ष

हम राजीव को खलनायक मान लेते हैं, लेकिन क्या उसकी भी कोई कहानी नहीं होगी? शायद वह अधिक महत्वाकांक्षी है, अधिक आक्रामक है। क्या यह गलत है? आज की प्रतिस्पर्धी दुनिया में, अगर आप पीछे रहना नहीं चाहते, तो आपको आगे बढ़ने के लिए प्रयास करने पड़ते हैं।

बॉस से अच्छे संबंध बनाए रखना एक कौशल है। यह जरूरी नहीं कि हमेशा चाटुकारिता हो। शायद राजीव अधिक communicative है, अधिक visible है अपने काम में। रमेश अपनी मेज पर चुपचाप बैठकर काम करता है और उम्मीद करता है कि लोग उसकी मेहनत को पहचानें। लेकिन आज की दुनिया में, आपको अपने काम को showcase करना भी आना चाहिए।

Humdrum जीवन का महिमामंडन

हम रमेश के 'साधारण' जीवन को महान बताते हैं। लेकिन क्या यह साधारणता वास्तव में एक विकल्प है या मजबूरी? शायद रमेश में वह wiry ऊर्जा और जोखिम लेने की क्षमता नहीं है जो सफलता के लिए जरूरी है।

जीवन को सिर्फ survive करना काफी नहीं है। हमें thrive करना चाहिए। और इसके लिए कभी-कभी अपने comfort zone से बाहर निकलना पड़ता है, calculated risks लेने पड़ते हैं।

नैतिकता की सापेक्षता

सबसे बड़ी समस्या यह है कि हम नैतिकता को black and white में देखते हैं। रमेश 'अच्छा' है और राजीव 'बुरा'। लेकिन वास्तविकता बहुत अधिक जटिल है।

क्या अपने परिवार को बेहतर जीवन देने के लिए थोड़ा tactical होना अनैतिक है? क्या अपने boss के साथ अच्छे संबंध बनाना गलत है? क्या अपनी achievements को properly present करना चाटुकारिता है?

toad की कहानी का असली सबक

रमेश उस toad को देखकर अपने बचपन की याद करता है। लेकिन असली सबक यह है कि toad भी अपने environment के अनुसार adapt करता है। वह बारिश के मौसम में निकलता है क्योंकि तब उसके लिए अवसर होते हैं। वह परिस्थितियों के अनुसार बदलता है।

शायद रमेश को भी यही सीखना चाहिए - adaptation। यह समझौता नहीं है, यह survival strategy है।

निष्कर्ष

मैं यह नहीं कह रहा कि ईमानदारी गलत है या भ्रष्टाचार सही। लेकिन हमें यह समझना होगा कि दुनिया ideal नहीं है, और हमें pragmatic होना पड़ता है।

रमेश की कहानी हमें एक false sense of moral superiority देती है। हम सोचते हैं कि सिर्फ 'अच्छा' होना काफी है। लेकिन अच्छाई के साथ-साथ हमें strategic, smart और proactive भी होना पड़ता है।

अंत में, सवाल यह है: क्या रमेश वास्तव में एक हीरो है, या फिर एक ऐसा व्यक्ति जो बदलाव से डरता है और अपनी निष्क्रियता को नैतिकता के रूप में justify करता है? शायद सच्चाई इन दोनों के बीच कहीं है।